International Journal of Applied Research 2018; 4(2): 190-191

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2018; 4(2): 190-191
www.allresearchjournal.com
Received: 01-12-2017
Accepted: 02-01-2018

डॉ. मोनिका गर्ग
राजकीय कलां महाविद्यालय,
कोटा राजस्थान, भारत

Correspondence
डॉ. मोनिका गर्ग
राजकीय कलां महाविद्यालय,
कोटा राजस्थान, भारत

आर्य समाज व समाज सुधार

डॉ. मोनिका गर्ग

प्रस्तावना

ईश्वर ने मनुष्य की प्रकृति ऐसी बनाई है कि वह अकेला नहीं रह सकता। बिना एक दूसरे की सहायता के हम हमारी दैनिक आवश्यक वस्तुओं की पूर्ति नहीं कर सकते है। समाज में रहकर मनुष्य को ऐसे धर्मो का पालन करना पड़ता है जिससे अन्य व्यक्तियों की जीवन चर्या में बाधा उत्पन्न न हों। ऐसे धर्मपालन का नाम हमारे वैदिक शास्त्रो में ''यम'' रखा गया है। योग दर्शन में यम के पॉच स्वरूप बताए गए है – अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह यमा। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने इनका पूर्णरूपेण पालन किया तथा अपने उद्देश्य में व जीवन में साकार किया। महर्षि दयानन्द सरस्वती आधुनिक भारत के महान् चिन्तक थे। धर्म, दर्शन, समाज, संगठन, राज व्यवस्था और आर्थिक व्यवस्था आदि के सम्बन्ध में जो विचार उन्होंने अपने ग्रंन्थो में प्रतिपादित किये, उनसे न केवल भारत अपितु सम्पूर्ण विश्व व मानव समाज का वास्तविक हित कल्याण हो सकता है। आर्य समाज के नियम संख्या छः में ''संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है।'' स्वामी दयानन्द के अनुसार भारत संसार के मुकुट का मोती है, और सत्य सनातन वैदिक धर्म के पुन स्थापन से यह देश अपनी जगमगाहट से विश्व जगत को चकाचौंध कर सकता है।

शताब्दियों तक गहरी निद्रा में रहने के पश्चात् 19वी. शताब्दी के मध्यभाग में पुनः जागरण के आन्दोलनों का सूत्रपात हुआ। विवाह प्रथा में समुचित सुधार, नारी शिक्षा, अस्पृश्यता निवारण वर्णाश्रम व्यवस्था का वैज्ञानिक व्याख्या आदि क्षेत्रों में आर्य समाज ने अग्रणीय भूमिका निभाई। हिन्दू समाज में व्याप्त अस्पृश्यता के अभिशाप को दूर करने और निम्न वर्ग को उच्च वर्ग के लोगों के समान स्तर पर लाने के लिए आर्य समाज के प्रयास उल्लेखनीय है। राष्ट्रपिता महात्मा गॉधी ने ऋषि दयानन्द सरस्वती की अर्द्धनिर्वाण शताब्दी के अवसर पर यरवदा कारागार से प्रेषित अपने संदेश में कहा था ''ऋषि दयानन्द ने हमारे लिए जो मूल्यावान विरासते छोड़ी है उनमें अस्पृश्ता के विरूद्ध उनका उद्घोषक सर्वप्रमुख हैं।'' [1] आर्य समाज के सिद्धान्तों में पूर्व और पश्चिम का सुन्दर समन्वय था। पश्चिम की अच्छी बातों बुद्धिवाद, उदारता, लोकतन्त्र और समानता के उत्कृष्ट तत्वों का अंगीकार तथा बाल विवाह आदि कुरीतियों का परित्याग था।

स्वामी दयानन्द पशु हत्या व मांस मक्षण के प्रबल विरोधी थे। गोकरूणानिधि के पृ. 6 में उन्होंने लिखा कि ''हे मांसादारियों तुम लोग जब कुछ काल के पश्चात् पशु न मिलेगें, तब मनुष्यों का मांस भी छोडेगें या नहीं?''' यज्ञो में होने वाली पशु बलि को उन्होंने वेद विरूद्ध एवं तर्कहीन सिद्ध माना है। सत्यार्थ प्रकाश में उन्होंने लिखा ''जो यज्ञ में पशु को मार करके होम करने से व्यक्ति स्वर्ग को जाता है, तो यजमान अपने पिता आदि को मार होम करके स्वर्ग क्यों नहीं भेजता?'' स्वामी जी ने 1866 ई. में अजमेर ए.जी.जी. डेविड्सन कमिश्नर तथा कर्न बुक, असिस्टेन्ट कमीश्नर (एजेण्ट टु दि गर्वनर जनरल) से गोवध बन्द करने की वार्ता की थी। 1873 में फर्रूखाबाद में उत्तरप्रदेश के लेफ्टीनेण्ट गर्वनर श्री म्योर से गोहत्या जैसे नृशंस कुकृत्य को समाप्त करने के सम्बन्ध में पूछा कि ''यदि लन्दन के इण्डिया कॉसिल के सम्बन्ध में पूछा कि'' यदि लन्दन के इण्डिया कॉसिल के आप सदस्य हो जावे, तो क्या आप गोवध को बन्द कराने का प्रयास करेगें। [2] स्वामी जी ने ''गोकरूणानिधि'' का अंग्रेजी में रूपान्तर कर विलायत भेजने की योजना बनाई, जिसे पढ़कर अंग्रेज पशु हिंसा तथा मांस भक्षण का परित्याग कर दे। उन्होंने गोरक्षार्थ मत संग्रह करने के लिए दो करोड़ हस्ताक्षर करवाने का आन्दोलनात्मक पग भी उठाया।

स्वामी दयानन्द मूर्तिपूजा विरोधी थे। बचपन में शिव की प्रतिमा पर चूहे को देखकर उनका प्रतिमा पूजा से विश्वास समाप्त हो गया। अंग्रेजो ने जिस बर्बरता से हिन्दू मंदिरो को विध्वंस कर उनकी मूर्तियों को तोड़ा था, उसे देखकर उन्होंने कहा ''जब सम्वत् 1914 के वर्ष में तोपो के मारे मंदिरो की मूर्तियॉ अंग्रेजो ने उड़ा दी थी तब मूर्ति कहॉ गयी थी? प्रच्युत बघेर लोगो ने जितनी वीरता दिखाई ओर लड़े, शत्रुओ को मारा परन्तु मूर्ति मक्खी की टॉग भी नहीं तोड़ सकी जो श्री कृष्ण सदृश्य कोई होता तो इनके धुर्रे उड़ा देता और यह भागते फिरते।

भला यह तो कहो जिसका रक्षक मार खावें, उसके शरणागत क्यों न पीट जावें।'' [3] आर्य समाज द्वारा फहराई गई ''पाखण्ड–खण्डिनी पताका'' भारतीय स्वाधीनता की राष्ट्रीय पताका थी। मूर्ति पूजादी समस्त पाखण्डों के खण्डन के पीछे ऋषि का प्रखर राष्ट्रीय प्रेम ही बोल रहा था। सत्यार्थप्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास में मूर्तिपूजा के 16 बड़े दोषो में एक बड़ा दोष यह बताया गया है कि प्रतिमा पूजन राष्ट्र को अकर्मण्य और परावलम्बी बना देता है। मूर्तिपूजा में विश्वास रखने वाला यह मानने लगता है कि मूर्तिपूजा में निवास करने वाला देवता इतना शक्तिशाली है कि शत्रु का आक्रमण होने पर ये उसे तुरन्त ध्वंस कर देगें, अतः उन्हें देश की रक्षा के लिए कोई पुरूषार्थ या प्रयत्न करने की आवश्यकता नहीं है, ओर इसी अंधविश्वास से हमारी राष्ट्र की दुर्दशा हुई।'' [4] महर्षि का मन्तव्य है कि विश्व की सर्वोच्च शक्ति केवल एक ईश्वर है, जिसका सर्वश्रेष्ठ नाम ''ओम है ऋग्वेद (1/164/46) में कहा गया है कि इन्द्र, मित्र, वरूण आदि एक ही सर्वोच्च सत्ता के सूचक है जिसे सद्विप (श्रेष्ठ विद्वान) विविध नामो से कहते है।

आर्य समाज में स्त्री को आदि शक्ति का अवतार बताया गया है। उसके अनन्त रूप है। जहॉ वह मोहिनी है, वहॉ पर अन्नपूर्णा भी है। उसमें सत्य शिवम् और सुन्दरम् हमें दिखाई देता है। [5] पूना प्रवचन में दयानन्द ने सामाजिक कृप्रथाओं की ओर इंगित करते हुए एक बार कहा था कि ''प्राचीन समय में स्त्रियों और पुरूषो के अधिकार बराबर थे। इस समय तो सब (प्रबन्ध) उलटे हो गए है एक आधा घास का तिनका तोड़ने में देर लगती है। परन्तु हमारे लोगो के धर्म टूटने में देर नहीं लगती। चोटी खुली रखी कि धर्म गया, अंगरखा लम्बा पहना कि धर्म गया। खाने पीने के प्रतिबन्ध तो इतने कड़े हो गए है। युद्ध करने वाले लोगो का ऐसे प्रतिबन्ध के प्रति लक्ष्य देने से खुले मन से लड़ता तो एक तरफ रह गया, परन्तु उनकी सारी पवित्रता पर चौका लगा दिया गया .....'' [6] आर्य समाज के पत्रों में नारी जागरण के विस्तृत कार्यक्रम को हाथ में लेते हुए नारी को जननी, जाया और वीरांगना के रूप में पुरूषो को कृतज्ञ रहने की प्रेरणा दी गई है। स्वामी जी के कार्यो का प्रभाव क्षत्रिय अभिजात वर्ग पर भी पड़ा और इस वर्ग ने देशोन्नति के लिए आर्य समाज का साथ दिया।

वस्तुतः आर्य समाज राष्ट्रीयता से ओतप्रोत है। विप्लवकारी काल में स्वधर्म, स्वभाषा, स्वदेशी प्रचार, राष्ट्रीय चेतना के साथ–साथ नारी स्वतन्त्रता व प्रत्येक वर्ग को अपने अधिकारों के लिए जागृत किया।

संदर्भ

1. महर्षि दयानन्द के सपनो का आर्य समाज पृ. 59
2. जोर्डन्स, जे.टी.एफ.– दयानन्द स.हिज. लीफ एण्ड आईडियाज पृ. 211
3. तुलनीय : भारतीय भवानीलाल–नवजागरण के पुरोधा–पृ. 73
4. विद्यांलकार, सत्यकेतु– आर्य समाज का इतिहास भाग–4 पृ. 46
5. विद्यांलकार, सत्यकेतु– आर्य समाज का इतिहास भाग–4 पृ. 46
6. सरस्वती पत्रिका दिनांक 1922 का अंक
7. ऋषि दयानन्द के शास्त्रार्थ और प्रवचन (पूना प्रवचन सं. –11)